

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया के टीचर्स ट्रेनिंग और गैर-औपचारिक शिक्षा विभाग (IASE), शिक्षा संकाय ने "फ्रॉम डेटा टू इनसाइट:रिफ्लेक्शंस ऑन रिसर्च प्रैक्टिस एंड पोसिबिलीटीस" विषय पर एक संगोष्ठी का किया आयोजन

नई दिल्ली, 1 अगस्त, 2025

अपनी शोध संस्कृति को सुदृढ़ करने के अपने निरंतर प्रयासों के तहत, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के शिक्षा संकाय के शिक्षक प्रशिक्षण और अनौपचारिक शिक्षा विभाग (IASE) ने दो प्रतिष्ठित संसाधन व्यक्तियों, डॉ. बेन अल्कोट, एसोसिएट प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (UCL) और डॉ. ज्वालिन पटेल, पीएचडी और पोस्ट-डॉक्टरेट, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा "फ्रॉम डेटा टू इनसाइट:रिफ्लेक्शंस ऑन रिसर्च प्रैक्टिस एंड पोसिबिलीटीस" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। यह वार्ता 31 जुलाई, 2025 को आईएसई के मल्टीमीडिया हॉल में आयोजित की गई।

यह संगोष्ठी जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के रजिस्टार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी के संरक्षण में आयोजित की गई और इसमें शिक्षा संकाय की डीन प्रो. जेसी अब्राहम और विभागाध्यक्ष प्रो. फराह फारूकी की उपस्थिति भी शामिल रही। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों और शोधार्थियों ने भी सक्रिय भागीदारी की, जिन्होंने अपने अवलोकन और शोध दृष्टिकोणों से चर्चा को समृद्ध बनाया।

कार्यक्रम की शुरुआत श्री मोहम्मद हैदर रज़ा द्वारा पढ़ी गई क़िरात के साथ आध्यात्मिक रूप से हुई। इसके बाद प्रो. फराह फारूकी ने विश्वविद्यालय के इतिहास और विभाग के अवलोकन पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। विभाग की ओर से, पीएचडी समन्वयक प्रो. गुरजीत कौर ने अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया और उनका औपचारिक परिचय कराया। इसके बाद, डॉ. बेन अल्कोट, डॉ. ज्वालिन पटेल और डॉ. मुरारी झा को विभाग के छात्रों द्वारा बनाए गए पौधे और हस्तशिल्प भेंट करके सम्मानित किया गया।

पीएचडी समन्वयक प्रो. गुरजीत कौर और डॉ. मोहम्मद मामूर अली द्वारा आयोजित और डॉ. अल्कोट और डॉ. पटेल के संयुक्त प्रयासों से प्रस्तुत इस व्याख्यान में शैक्षिक अनुसंधान में मिश्रित विधियों की जटिलताओं और संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया। यह सत्र शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हुआ, क्योंकि रिसोर्स पर्सन ने उन्हें अपने शोध में वास्तव में मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे पद्धतिगत गहराई को बढ़ावा मिला। चर्चा आगे चलकर गुणात्मक और मात्रात्मक आँकड़ों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के महत्व पर केंद्रित हुई, और दोनों को अलग-अलग मानने के बजाय उन्हें सार्थक रूप से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया गया। डॉ. पटेल ने शैक्षिक अनुसंधान में प्रायोगिक अध्ययनों के महत्व पर प्रकाश डाला और स्कॉलर्स से आग्रह किया कि वे इस पर विचार करें कि उनका शोध कैसे व्यावहारिक और प्रभावशाली हो सकता है। श्रोताओं के अनुरोध पर, व्याख्यान में विभिन्न शोध विधियों पर अतिरिक्त अंतर्दृष्टि के साथ-साथ क्षेत्र से ग्राफिक प्रस्तुतियाँ भी शामिल की गईं। यह व्याख्यान संवादात्मक और उपयोगी रहा, जिसमें संसाधन व्यक्तियों और संकाय सदस्यों द्वारा मूल्यवान क्षेत्रीय अनुभवों को साझा किया गया, जिससे अकादमिक विमर्श में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि जुड़ी।

चर्चा के बाद, रिसर्च स्कॉलर्स और संकाय सदस्यों ने एक गतिशील चर्चा में भाग लिया, जिसमें संसाधन व्यक्ति ने प्रश्नोत्तर सत्र में अपने विचार और शंकाएँ साझा कीं। डॉ. मुरारी झा ने श्रोताओं को संबोधित किया और पिछले वर्षों में विश्वविद्यालय के साथ अपने जुड़ाव को व्यक्त किया और विद्वानों को ऐसे शोध करने के लिए प्रेरित किया जिससे समाज को कुछ वापस मिल सके।

यह संगोष्ठी शोध में मिश्रित आँकड़ों के प्रभावी उपयोग पर बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करने में सफल रही। इसका औपचारिक समापन सुश्री तिशा गोस्वामी के धन्यवाद ज्ञापन और उसके बाद एक समूह फोटो सत्र के साथ हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी